पुस्तक भारती रिसर्च जर्नल

Our Golden Heritage

January-March 2022

पुस्तक भारती रिसर्च जर्नल

PUSTAK BHARATI RESEARCH JOURNAL

A Peer Reviewed Journal

त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष- 4, जनवरी –मार्च , 2022, अंक – 1

प्रधान संपादक : डॉ. रत्नाकर नराले

सह संपादक : डॉ. राकेश कुमार दूबे

रिव्यू कमेटी

डॉ. प्रो. तंकमणि अम्मा, तिरुवनन्तपुरम्
प्रो. हेमराज सुंदर, मारीशस
डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय, मुंबई
प्रो. डॉ. शांति नायर, केरल
डॉ. सिराजुद्दिन नुर्मतोव, उजबेकिस्तान
प्रो. दक्ष्य मिस्त्री, बड़ोदा
प्रो. कृष्ण कुमार मिश्र, मुंबई

संपादक मण्डल

प्रो. सोमा बंद्योपाध्याय, पश्चिम बंगाल
प्रो. अरुणा सिन्हा, वाराणसी
प्रो. विनोद कुमार मिश्र, त्रिपुरा
प्रो. उमापति दीक्षित, आगरा
प्रो. उपुल रंजीथ हेवावितानागामगे, श्रीलंका
डॉ. मैरम्बी नुरोवा, ताजिकिस्तान
प्रो. दर्शन पाण्डेय, दिल्ली

परामर्श मण्डल

डॉ. तुलसीराम शर्मा, कनाडा
डॉ. मनोज कुमार पटैरिया, नई दिल्ली
डॉ. एन. के. चतुर्वेदी, जोधपुर
प्रो. नीलू गुप्ता, अमेरिका
डॉ. मृदुल कीर्ति, आस्ट्रेलिया
प्रो. कमलेश शर्मा, कोटा

संरक्षक मण्डल

डॉ. यशवंत पाठक, अमेरिका
श्री रतन पवन, अमेरिका
श्री पंकज पटेल, अमेरिका

पत्रिका का मूल्य / सदस्यता राशि संस्था के सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, मंगारी के खाता संख्या 5144696109 (IFSC: CBIN0281306) में जमाकर उसकी सूचना मेल या नं. +91-7355682455 पर दें।

अनुक्रमणिका

संपादकीय

1. वैदिक साहित्य का वैश्विक संस्कृति में मूलावदान — 1
   डॉ. ज्योत्स्ना द्विवेदी
2. हिन्दूधर्म के मूल तत्व — 7
   (महामना पं. मदनमोहन मालवीयजी की अवधारणा)
   प्रो. दीनबन्धु पाण्डेय
3. The Features of Ancient India's Linguistics — 15
   Prof. Dr. Zilola Khudaybergenova
4. नवजागरणकालीन आलोचना और आचार्य रामचंद्र शुक्ल — 28
   डॉ.करुणाशंकर उपाध्याय
5. आदिवासी विमर्श : इतिहास, संघर्ष और प्रासंगिकता — 36
   मोहन कुमार
6. मॉरीशस के हिन्दी कथा-साहित्य में व्यक्त सांस्कृतिक चेतना — 43
   डॉ. कृष्ण कुमार झा
7. अर्थवत्ता खोते समय–समाज–संबंध–सैद्धांतिकी की यथा–कथा — 53
   डॉ. आनंद पाटील
8. आधुनिक साहित्यिक हिन्दी में प्रचलित पूर्ण संख्यावाचक शब्दों का उद्गम एवं विकास — 62
   डॉ. सिराजूद्दीन नुर्मातोव
9. रामकथा : भारतीय समाज का पथ-प्रदर्शक — 68
   डॉ. सुलोचना दास
10. प्रेमचंद की कहानियों का मनोवैज्ञानिक आधार — 78
    डॉ. संजय कुमार

संपादकीय कार्यालय

Toronto, Ontario, Canada, M2R
email : pustak.bharati.canada@gmail.com
Web : pustak-bharati-canad.com

प्रबंध एवं वितरण

Pustak Bharati (Books-India)Publishers & Distributors
H.No. 168, Nehiyan,Varanasi-221202, U. P. India
email: pustak.bharati.india@gmail.com

* प्रत्येक शोध-पत्र में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं। संपादक मंडल का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

9

रामकथा : भारतीय समाज का पथ-प्रदर्शक

डॉ. सुलोचना दास

तुलसी-साहित्य का अध्ययन करते हुए एक प्रश्न सहज ही मानस में कौंध उठता है कि आज के विश्वव्यापी भूमंडलीकरण और उत्तर-आधुनिकता के इस दौर में मध्यकालीन कवि तुलसी और उनके साहित्य की आवश्यकता क्यों है? क्या आज पाठ्यक्रम में तुलसी को रखा जाना औचित्यपूर्ण है अथवा नहीं?

वस्तुतः इन प्रश्नों का उत्तर तो हमें तुलसी-साहित्य में विद्यमान तदयुगीन सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के अध्ययनोपरांत ही मिल सकता है। तुलसी का साहित्य मध्यकालीन उत्तर-भारत का सबसे प्रामाणिक संदर्भ कोश है। उसमें मध्यकालीन समाज अपनी पूरी करालता के साथ हरकत करता है। तुलसी ने 'रामचरितमानस', 'कवितावली', 'दोहावली', 'गीतावली', 'विनयपत्रिका' आदि में जिस कलियुग का वर्णन किया है वह पौराणिक कलियुग का उल्लेख न होकर, उन्हीं की आंखों देखी मध्यकालीन सामाजिक वीभत्सता रूपी कलियुग का चित्रण है। तुलसी का समकालीन समाज अनेक प्रकार की विषमताओं से त्रस्त था, दुःख-दारिद्रय से पीड़ित था, राजा कृपालु नहीं थे, अकाल-महामारी आदि का अकांड तांडव चल रहा था। समाज के इसी भयावह और विकराल रूप का चित्रण तुलसी ने कलि-वर्णन के माध्यम से किया है। डॉ. रामकुमार वर्मा की भी इस तथ्य से सहमति है- "तुलसीदास ने मानस के उत्तरकांड में कलियुग का जो वर्णन किया है, वह उन्हीं के समय की तत्कालीन परिस्थिति थी। उस अंश को पढ़कर ज्ञात होगा कि कवि के मन में समाज की उच्छृखंलता के लिए कितना क्षोभ था।"[1]

मध्ययुगीन समाज जाति-प्रथा, संप्रदायवाद, छुआछूत, ब्राह्मणवादी मानसिकता, वर्ग-व्यवस्था, वर्ग-व्यवस्था आदि से बुरी तरह त्रस्त था। समाज वर्ग-व्यवस्था के नाम पर दो वर्गों- उच्च और निम्न में विभक्त था। उच्च वर्ग के अन्तर्गत सामंत आते थे, जो निम्न वर्ग के साथ पशु से भी बदत्तर व्यवहार किया करते थे। निम्न वर्ग को सदैव अपमानित होना पड़ता था, लज्जित होना पड़ता था। वे दिन-रात जी-तोड़ मेहनत करने के बावजूद अपना भरण-पोषण नहीं कर पाते थे। सामंत प्रभुत्वशाली वर्ग था। समाज पर उनका दबदबा होने के कारण वे उपभोक्ता भी थे। सामान्य जनता इनके चंगुल में फंसी बुरी तरह से छटपटा रही थी। आर्थिक असमानता के कारण निर्धन जनता को सदैव अपमानित होना पड़ता था। उन्हें दर-दर भटकना पड़ता था।

मध्यकालीन समाज सामंती शोषण से त्रस्त होने के साथ ही वर्ण-व्यवस्था से भी पीड़ित था। युगीन समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार वर्णों में विभक्त था। सामंतों के समान ही ब्राह्मणों को भी श्रेष्ठ समझा जाता था। अतएव समाज पर उनका भी वर्चस्व था। जनेऊ धारण का अधिकार